Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

हिन्दी साहित्य पर आर्यसमाज की विचारधारा का प्रभाव

बताले दरेप्पा मल्लिनाथ

शोध छात्र, सोलापूर विश्वविद्यालय, सोलापूर.

प्रस्तावना :

भारत दार्शनिकों एवं मनीषियों की पावन भूमि है। प्राचीन काल से आजतक इस पवित्र रजकण ने गंगा की निर्मल धारा की तरह आध्यात्मिक एवं मानव-कल्याण की जो अनवरत धारा बहाई उसका उदाहरण विश्व के किसी अन्य देश में मिलना दुर्लभ है। १९ वीं शताब्दी में जबकि अंग्रेजी सभ्यता अपने पाँव भारत में दृढता पूर्वक जमा रही थी और भारतीय समाज मरणोन्मुख साँस ले रहा था, तब ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के रुप में मृतक प्राय: समाज को गंगा जली छिड़क जीवित करने का असफल प्रयास किया जा रहा था।

१८५७ की महान क्रांति के पश्चात् जब कि समस्त राष्ट्र अंग्रेजी अत्याचार और दमन चक्र का शिकार हो रहा था, एक नई चेतना नये प्राण, नई आशा, तथा नया विश्वास जनता के मानस तल पर तैरता दिखाई दिया। इस महान आशा के संदेश को देने वाले उसी ऋषियों की परम्परा में से एक थे **"स्वामी दयानंद",** जिन्होंने न केवल देश के पुर्ननिमाण में योगदान दिया वरन् भारत को सत्य, प्रेम, शांति और अहिंसा के संदेश के साथ साथ राष्ट्रभाषा, राष्ट्र प्रेम और शिक्षा के क्षेत्र में दृढ़ आदर्शवादी विचार हमारे सामने प्रस्तुत किये।

स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा १९ वीं शताब्दी में ही घोषित कर दिया था। उस समय ही उनका यह कथन था कि, 'हिन्दी ही संपूर्ण राष्ट्र की जन भाषा के रुप में विकसित हो सकती है। उन्होंने समस्त देश का भ्रमण करने के पश्चात् यह मत दिया। उनके विचार में शिक्षा केन्द्रों में पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा और धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य स्थान मिलना चाहिए।'

हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं पर आर्यसमाज की विचारधारा के प्रभाव का अध्ययन भी कम मनोरंजक नहीं है। यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो स्वामी दयानन्द का कार्यकाल वही था जिसे हिन्दी साहित्य का भारतेन्दु युग कहा जाता है। आयु में स्वामी दयानन्द से पच्चीस वर्ष छोटे (भारतेन्दु का जन्म सम्वत् १८५० ई.) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपनी पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय की आस्थाओं के कारण प्रारम्भ में स्वामी दयानन्द के धुर विरोधी रहे, किन्तु कालान्तर में उन्होंने स्वामी जी की स्वदेश भक्ति, धर्म-प्रेम तथा समाज-सुधार की तीव्र ललक को जब समझा तो वे उनके प्रशंसक बन गए।

धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं में स्वामी जी से असहमत होते हुए भी भारतेन्दु यह मानते थे कि विशुद्ध आर्य धर्म के स्थान पर नाना मत-सम्प्रदायों का विस्तार भारत की राष्ट्रीय एकता हेतु घातक है। उनकी यह एकान्त कामना थी कि, "भारत में फैले इन मत-सम्प्रदायों के जटिल जाल की समाप्ति हो और भारतवासी आर्यगण एक विशुद्ध आस्तिक वेदमत के अनुयायी बनें समाज में व्याप्त नाना कुरीतियों, अन्धविश्वासों तथा कदाचारों के कट्टर विरोधी भारतेन्दु के सुधारवादी स्वर उनके अनेक नाटकों में फूटे हैं।"[१] १८८३ में स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् भारतेन्दु ने एक रुपक 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' शीर्षक से लिखा था। इसमें उन्होंने एक कल्पित कथा का सहारा लेकर स्वमी दयानन्द की स्वदेश-भक्ति तथा लोकोपकार की प्रवृत्ति की भूरि-भूरि प्रंशसा की है।

भारतेन्दु युग के अन्य साहित्यकार-प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', बालकृष्ण भट्ट आदि प्रत्यक्षतया स्वामी दयानन्द से प्रभावित रहे। उनकी रचनाओं में आर्यसमाज का सुधारवादी दृष्टिकोण कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं परोक्ष रुप में प्रकट हुआ। यदि कथा-साहित्य की बात करें तो प्रेमचन्द तथा सुदर्शन आर्यसमाज से जुड़े रहे। प्रेमचन्द के उपन्यासों में वर्णित "विधवा-विवाह का समर्थन (प्रतिज्ञा), वृद्ध (अनमेल विवाह) विवाह की हानियाँ (निर्मला), मन्दिरों में वेश्या नृत्य का विरोध (सेवासदन),

अस्पृश्यता तथा दलित प्रथा □ा विरोध (रं□भूमि, गोदान), ग्रामों में पुरोहितशाही का नंगा नाच (गोदान में पं. दातादीन के कारनामे), नारी □ी प्रताड़ना (रंगभूमि, गोदान तथा अन्य रचनाओं में) जैसे सामाजि□ अनाचारों का मुखर विरोध प्रमेच-द □ी आर्यसमाज से समृद्धता का ही परिणाम था।"[२] पंजाब □ कथाकार सुदर्शन तो सीधे रुप से आर्यसमाज से जुड़े थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द के भक्ति भावापन्न जीवन-चरित 'श्रीमद्दयानन्द प्र□ाश' □ा ऊर्दू अनुवाद □िया था।

हि-दी □ा द्विवेदीकालीन काव्य प्रत्यक्ष तथा परोक्ष, दोनों प्रकार से आर्यसमाज से प्रभावित रहा। मैथिलीशरण गुप्त के साकेत, भारत भारती आदि □ाव्यों में व्यक्त विचार तथा पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय □ 'प्रियप्रवास' महा□ाव्य में कृष्ण की पुराण वर्णित बाल्यकालीन चमत्कारपूर्ण कथाओं को कवि ने जिस प्रकार तर्कयुक्त स्वाभाविकता का जामा पहनाया हैं तथा उन□ी अतिमानवीयता तथा अलौकिकता को अस्वीकार कर उन्हें जो सहज स्वाभाविक रुप दिया है वह उन पर आर्यसमाज के प्रभाव को ही लक्षित करता है। द्विवेदी □ाल के कवियों ने श्रृंगार वर्णन से जो अपने □ी अछूता रखा वह आर्यसमाज के पवित्रतावाद (Puritanism) का ही प्रभाव था। रामधारीसिंह दिनकर ने तो इस तथ्य को हल्के-फुल□ ढंग से लिखा, "इस □ाल के कवि श्रृंगार रस से बचते रहे। उन्हें ल□ता था कि स्वामी दयानन्द उनके पीछे □ड़े हैं और उन्हें श्रृं□ारासक्ति से दूर रहने □ लिए □ह रहे हैं।"[३]

हि-दी □ साहित्यकारों पर स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव का यदि उल्ले□ किया जाए तो यह ए□ पृथक् विवेचना की वस्तु होगा। कथाकार चतुरसेन शास्त्री, महाकवि हरिवंशराय बच्चन, नाटककार तथा □था-लेखक विष्णु प्रभाकर, डॉ. नगेन्द्र, पं. क्षेमचन्द्र सुमन आदि साहित्यकारों ने अपने आत्मवृत्तान्तों में अपने आर्यसमाज से सम्बन्धों तथा उस□ प्रभाव □ी स्वी□ार किया है।

वस्तुतः साहित्य प्र□ाशन का कार्य आर्यसमाज में संस्था तथा व्यक्ति दो-नों □ द्वारा किया गया। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन□ाल में ही वैदिक यन्त्रालय और परोपकारिणी सभा की स्थाप-ना □र उन्हें साहित्य प्र□ाशन का दायित्व सौंप दिया था। कालान्तर में विभिन्न प्रान्तों में स्थापित आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने यह दायित्व लिया और प्रचुर मात्रा में विभिन्न भाषाओं में साहित्य □ा प्रकाशन हुआ। साहित्य के प्रकाशन में व्यक्तियों □ा योगदान भी महत्वपू□ रहा है। महाशय राजपाल □ आर्य पुस्तकालय, रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर तथा अजमेर में बाबू मथुराप्रसाद शिवहरे द्वारा स्थापित आर्य साहित्य म□डल ने श्रेष्ठ साहित्य का प्रकाशन किया। मूलतः सि-ध □ -िवासी श्री □ोवि-दराम हासा-न-द -े प्र□ाश-न □ार्य □लकत्ता में आरम्भ किया। कालान्तर में वे इसे दिल्ली में ले आए। वि□त पचास वर्षों में इस संस्थान से उच्च कोटि के साहित्य का प्रकाशन हुआ है।

साहित्य से ही संस□ति की रक्षा है और संस्कृति ही देश की आज़ादी तथा गौरव का मूल है। महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी -े भारतीय संस□ति की रक्षा की। उन्होंने मानव को अपने स्वरुप □ा ज्ञान कराया और कर्तव्य का उचित मा□ बताया। भारतीय संस□ति की रक्षा के लिये उनका नाम इतिहास के पन्नों में सदा अमर रहे□ा।

संदर्भ

१) द्रष्टव्य - भारतेन्दु □ विचार : एक पुनर्विचार - चन्द्रभानु सोनवणे।
२) प्रेमचन्द - □लम □ा सिपाही - अमृतराय
३) □ाव्य □ी भूमि□ा पृ. २६ - रामधारीसिंह दि-□र
४) स्मारि□ा - आर्य समाज शताब्दी समारोह, अमृतसर
५) आर्यसमाज - □ल और आज, डॉ. भवानीलाल भारतीय